Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
B.A part 1, Paper - II
Indian political thought
Topic - ~~Swami Dayan~~ Gokhale - 2
Lecture - 34

गोपाल कृष्ण गोखले - 2

गोखले का आर्थिक चिन्तन

विश्वनाथ प्रसाद वर्मा के अनुसार "गोपाल कृष्ण गोखले इतिहासकार तथा अर्थशास्त्र के आचार्य थे। दादाभाई नौरोजी की भाँति उन्हें भी राजनीति के आर्थिक आधारों के अध्ययन में रुची थी।

गोखले के महत्वपूर्ण आर्थिक विचार निम्नलिखित हैं -

(1) गोखले ने भारत की गरीबी पर काफी चिन्तन किया और उसका एक बड़ा कारण यह बताया कि शान्तिकाल में भी सामरिक दृष्टि पर एक विशाल यूरोपीय सेना के व्यय तथा यूरोपियनों के ऊँचे वेतन चुकाने का भार, भारत सहन कर रहा है। ब्रिटिश सैनिकों और उनके अमले की और अधिक नियुक्ति की जाने के फलस्वरूप सैन्य - व्यवस्था पर खर्च बराबर बढ़ता जा रहा है जिसे वहन करने से भारत की स्थिति आर्थिक दृष्टि से बदतर हो रही है।

(2) भारत में रेल - निर्माण का विस्तार शोषण के लिए किया जा रहा है। यद्यपि रेलों के कारण संचार - व्यवस्था में सुधार हुआ है और अकालग्रस्त क्षेत्रों को भोजन आदि पहुँचाने में रेलें बड़ी उपयोगी

रही है, तथापि उनका विस्तार वस्तुतः मानवोचित कारणों से न किया जाकर व्यावसायिक कारणों से प्रेरित है अर्थात् देश के आन्तरिक यातायात की अपेक्षा दूसरे देशों में कुछ बड़े पैमाने पर अनाज और कच्चा माल खींचने के लिए ही रेलों का अधिक प्रयोग हो रहा है। भारत से बाहर भेजी जाने वाली सामग्री के बदले में विदेशों से बना सस्ता और अनावश्यक जो सामान भारत में आता है, उसके वितरण में रेलें सहयोग दे रही हैं। आयात किया गया यह माल स्वदेशी उद्योगों का नाश कर रहा है और दस्तकारों तथा छोटे शिल्पकारों को पुनः कृषि-कार्य के लिए विवश कर रहा है।

(3) निर्बन्ध व्यापार की नीति भारत पर लाद दी गयी है जिसने देश के सभी उद्योगों का नाश कर दिया है। इस नीति का एक अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि लोग पितृ खेती के लिए विवश होने के कारण अधिकाधिक गरीब होते जा रहे हैं। वाष्प-चालित तथा अन्य मशीनों की प्रतियोगिता से भारत के पुराने उद्योग टिक नहीं पा रहे हैं और इन सब कारणों से देश की प्रगति रुक गयी है।

(4) विदेशी व्यापारियों को दी जाने वाली अधिक-से-अधिक रियायतों और सुविधाओं के कारण रेलों को घाटा हो रहा है।

(5) भारतीय वित्त व्यवस्था में वस्तुतः सैनिक दृष्टिकोण मुख्य है और भारतीयों के लिए आर्थिक विकास या सैनिक उत्थान की दिशा में अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा सकता

जब तक देश के राजस्व का विनियोजन सैनिक कामों के लिए जारी रहेगा। गोखले ने सुझाव दिया कि जब तक भारत पर वास्तव में हमला न हो या हमले का भय न पैदा हो जाये, जब तक भारत की प्राकृतिक सीमाओं से बाहर से बाहर की जाने वाली सैन्य-कार्रवाई के लिए भारत के राजस्व का प्रयोग कम से कम उस समय तक नहीं होना चाहिए जब तक कि उस व्यय के एक भाग का भार ब्रिटिश बजट-अनुमानों पर भी न डाल दिया जाये।

(6) रुपये की मूल्य-वृद्धि के कारण उपभोग-वस्तुओं की कीमतें बढ़ रही हैं और जनता कष्ट में है अतः सूती-वस्त्र पर से उत्पादन शुल्क हटाया जाय, नमक-शुल्क कम किया जाय तथा और भी अनावश्यक करों में कमी की जाय या उन्हें हटाया जाय।

(7) लोगों के कल्याण-कार्यों पर भार प्रान्तों पर है लेकिन राजस्व का अधिकांश भाग केन्द्रीय सरकार हड़प लेती है। यह स्थिति अनुचित है। "बढ़ते हुए राजस्व से मिलने वाली पूरी रकम लेने के बदले भारत सरकार को चाहिए कि वह प्रान्तीय सरकारों से बड़े-बड़े निश्चित अंशदान - उदाहरणार्थ - प्रान्तीय सरकारों के राजस्व का एक-तिहाई अथवा एक-चौथाई भाग ले ले और बाकी दो-तिहाई अथवा तीन-चौथाई की पूर्ति बढ़ते हुए संसाधनों से करे।" ये संसाधन हैं- सीमा शुल्क, उत्पादन शुल्क और स्टाम्प।

(8) प्रान्तों को कराधान का अधिकार दिये जाने से पूर्व उन पर कुछ विशेष शर्तें लगायी जानी चाहिए,

जैसे - प्रान्तीय बजटो पर विचार करने की प्रथा सुनिर्धारित हो, प्रत्येक स्थानीय सरकार परिषद सरकार के रूप मे कार्य करे जिसकी अध्यक्षता इंगलैण्ड से आने वाला नया गवर्नर करे, और प्रान्तीय परिषदो मे अधिक संख्या निर्वाचित सदस्यो की हो, ये शर्ते पूरी होने पर ही प्रान्तीय परिषदो को कराधान का अधिकार दिया जाय।

(9) गोखले ने कृषको के दीन-हीन और ऋण-ग्रस्त आर्थिक दशा को चिन्ति करते हुए सुझाव दिया कि सरकार किसानो को करो मे उचित राहत दे और साथ ही कर वसुली के तरीको मे भी समुचित परिवर्तन करे।

(10) गोखले ने कृषि के साथ ही देश के औद्योगिक विकास पर बल दिया और कहा कि इस क्षेत्र मे उपेक्षा वृत्ति भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी घातक होगी। उन्होने देश के उद्योगपतियो से अपील की कि उद्योग मे को श्रम मे अधिकाधिक कुशलता लाने के प्रयत्न किये जाये, उत्पादन को बढ़ाया जाय तथा भारतीय माल के लिए विदेशो मे मण्डियाँ खोली जाये, उद्योग-धन्धो के लिए उपलब्ध स्रोतो का उपयोग इस प्रकार किया जाय कि उनका पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सके। उद्योगो मे भारत के मध्यवर्गीय शिक्षित व्यक्तियो की नियुक्तियो को प्रोत्साहन दिया जाय ताकि एक ओर तो बेरोजगारी से राहत मिले और दूसरी ओर देश के शिक्षित वर्ग का एक नयी दिशा मे प्रशिक्षण हो जिससे औद्योगीकरण के युग के लिए एक नयी पीढ़ी तैयार हो सके।

(11) गोखले ने आयकर की बढ़ाने वाली सीमा का समर्थन किया। 1907 के अपने बजट भाषण में उन्होंने स्वर्ण-मुद्रा के प्रारम्भ का विरोध किया, क्योंकि ब्रिटिश सरकार भारतीय मुद्रा को लेने के रूप में ही ग्रहण करती थी जिससे भारतीय आर्थिक हितों को हानि पहुँचती थी। गोखले ने भारतीय रुपये को ब्रिटिश रुपये में बदलने की बात कही।

गोखले पश्चिम की पूँजीवादी अर्थनीति और अविकसित अथवा पिछड़े देशों की राजनीतिक-आर्थिक माँगों के संघर्ष द्वारा उत्पन्न खतरों को भली भाँति समझते थे। अतः उनका स्पष्ट मत था कि पूँजीवादी देशों की अर्थनीति ज्यों की त्यों भारत में लागू नहीं की जानी चाहिए।

गोखले और तिलक की तुलना करते हुए डॉक्टर पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है कि "गोखले नरम थे और तिलक गरम। गोखले वर्तमान में सुधार चाहते थे, जबकि तिलक उसके पुनर्निर्माण के पक्ष में थे। गोखले को नौकरशाही के साथ काम करना पड़ता था, तो तिलक को नौकरशाही के साथ भिड़न्त रहती थी। गोखले सम्भवतः सहयोग चाहते थे, तिलक का झुकाव अड़ंग नीति की तरफ था। गोखले का उद्देश्य था स्वशासन जिनके लिए जनसाधारण को अंग्रेजों की कसौटी पर खरा उतरकर अपने आपको योग्य सिद्ध करना था, तिलक का उद्देश्य था स्वराज्य जो प्रत्येक भारतवासी का जन्मसिद्ध अधिकार था और जिसे वे विदेशियों की बाधा की परवाह किये बिना लेकर ही रहना चाहते थे।

गोखले अपने समय के साथ थे और तिलक अपने समय से बहुत आगे।

अपनी मृत्यु के समय उन्होंने भारत सेवक संघ के सदस्यों को कहा, एक जीवन कथा के लिखने अथवा एक प्रतिमा के स्थापित करने में अपने समय का अपव्यय न करना, बल्कि अपनी सम्पूर्ण आत्मा को भारत की सेवा में लगा देना केवल तभी गांधी उसके सच्चे तथा निष्ठावान सेवकों में होगी। महात्मा गांधी ने उनके बारे में अपनी सच्ची श्रद्धा अर्पित करते हुए कहा था कि "सर फिरोज शाह मेहता मुझे हिमालय की तरह दिखाई पड़े जिसे नापा नहीं जा सकता और लोकमान्य तिलक सागर की तरह जिसमें उतर नहीं सकता, परन्तु गोखले गंगा के समान थे जो एक सबको अपने पास बुलाती है, राजनीतिक क्षेत्र में उनके जीवन काल में और उसके अनन्तर गोखले का मेरे हृदय में जो स्थान रहा है, वह अमूर्त है।